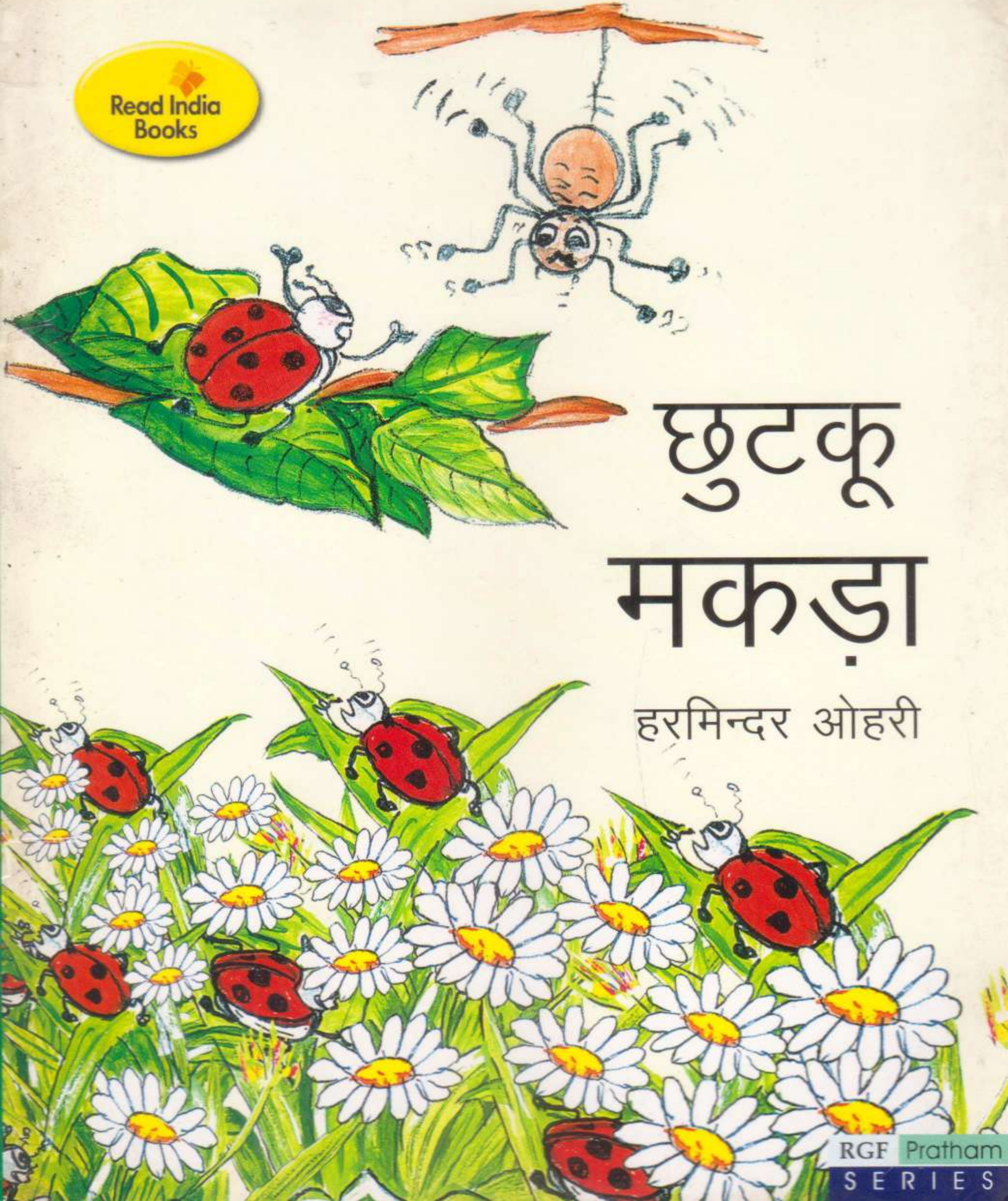
Read India Books

# छुटकू मकड़ा

हरमिन्दर ओहरी



RGF Pratham
SERIES

Original Story (*English*) Spincy Spider by Herminder Ohri


First edition: 2004

Illustrations: Herminder Ohri
Design: Moonis Ijlal
Hindi Translation: Pratham Books Team



ISBN: 81-8263-038-X



Registered Office :
PRATHAM BOOKS
930, 4th Cross, 1st Main, MICO Layout, Stage 2,
Bangalore 560 076

Regional Offices in Mumbai and New Delhi

Typesetting and Layout by :
Pratham Books

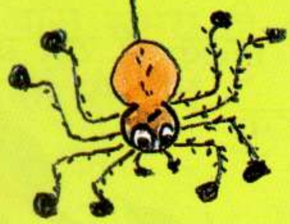
Printed by :
International Print-O-Pac Limited
New Delhi

Published by :
Pratham Books
www.prathambooks.org





# छुटकू मकड़ा



लेखन एवं चित्रांकन
हरमिन्दर ओहरी

हिन्दी अनुवाद
**प्रथम पुस्तक समूह**



RGF Pratham
SERIES

किसी जंगल में, कँटीली झाड़ियों के बीच, एक छोटा सा मकड़ा रहता था। उसका नाम था—छुटकू मकड़ा। उसके दादा के दादा, परदादा के दादा पर 'छोटा–बड़ा मकड़ा' नाम से गीत लिखा गया था। एक बार छुटकू ने यह बात अपने दोस्त गुबरैला अटकू और उसके भाई मटकू को बताई।





अटकू और मटकू के परिवार में कोई भी प्रसिद्ध नहीं था।

गुबरैलों के पास समय ही कहाँ होता है; इन सब चीज़ों के लिए ! वे तो सुबह से रात तक काम में जुटे रहते हैं, खाने का सामान इकट्ठा करना, घर में मदद करना। काम करते हुए कहीं चोट न लग जाये, इसका भी खतरा रहता है।







छुटकू के पास तो सिर्फ़ दो ही काम थे, अपने घर के लिए जाला बुनना, और जाले में मक्खी के फँसने का इंतज़ार करना।

छुटकू **प्रसिद्ध** होना चाहता था लेकिन वह यह नहीं जानता था कि यह कैसे हो। वह हर समय इसी बारे में सोचता रहता था। एक दिन उसने एक डाल से दूसरी डाल तक जाला बुना, फिर दूसरी से तीसरी तक।





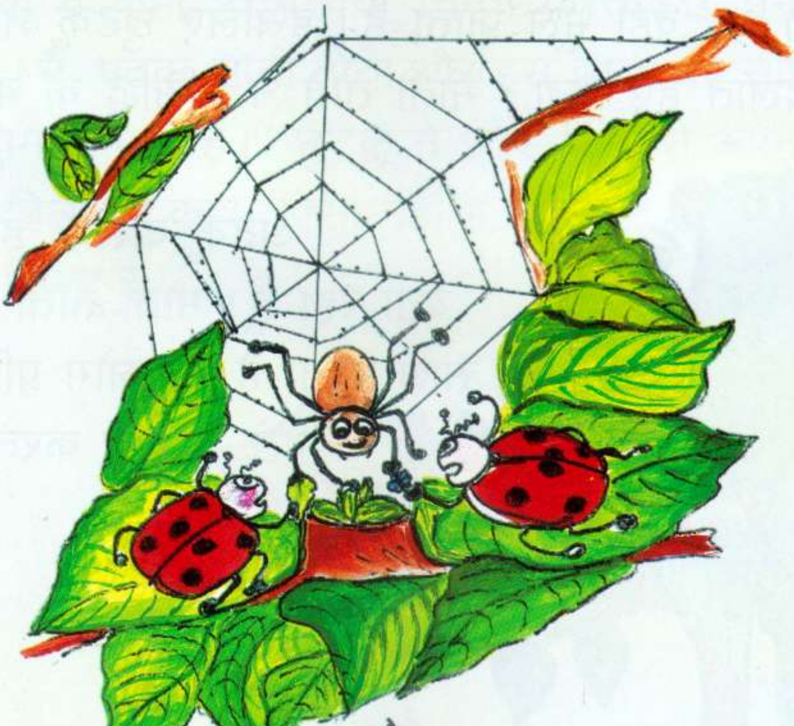
फिर ऐसे करते–करते उसने दस डालों पर जाला बुना। लेकिन उसे **प्रसिद्धि** नहीं मिली। उसने अपने दोस्तों से पूछा, लेकिन उनको भी नहीं पता था कि प्रसिद्ध कैसे हुआ जाए।



एक दिन सुबह–सुबह, अटकू और मटकू, छुटकू के घर आये। अटकू–मटकू छुटकू के लिए एक मक्खी भी लाये थे; जिसे पाकर छुटकू बहुत खुश हुआ। उसने अपने मेहमानों की बहुत खातिरदारी की। फिर वे बातें करने लगे।

अटकू–मटकू ने कहा, "छुटकू, एक बात बतायें? हम जानते हैं कि प्रसिद्ध क्या होता है।"

छुटकू खुशी के मारे उछल पड़ा, उसके हाथ से मक्खी गिरते–गिरते बची। छुटकू बोला, "बताओ बताओ, अटकू कहाँ है प्रसिद्धि?"



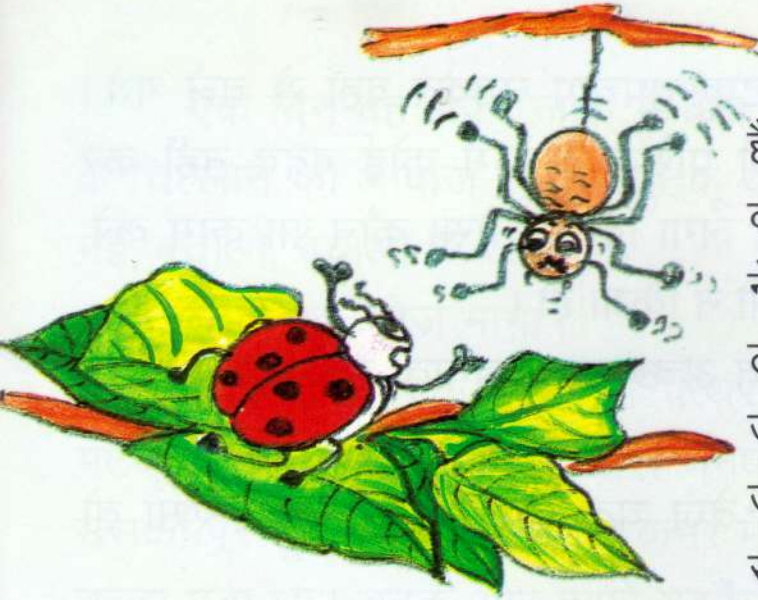
अटकू ने बोलना शुरू किया, "मेरा और मटकू का एक दोस्त है—मोती तोता। वह हमारा ज़्यादा अच्छा दोस्त तो नहीं है। लेकिन जब वह पेड़ पर फल खाता है तो हमको भी उसके कुतरे हुए टुकड़े मिल जाते हैं। इसलिए तुम कह सकते हो कि वह हमारा दोस्त है।"



छुटकू जानता था कि अटकू बड़ा बातूनी है। वह बातें करते—करते थोड़ा भटक जाता है। और फिर जो बात वह बताने के लिए आया था, वही भूल जाता है। इसलिए छुटकू ने उसे याद दिलाते हुए पूछा, "मोती तोते ने प्रसिद्धि के बारे में क्या कहा था?"

अटकू बोला, "हाँ, हाँ, वही बता रहा हूँ। मोती तोता मनुष्यों के साथ रहता है। वे लोग प्रसिद्ध लोगों के बारे में बातें करते रहते हैं।

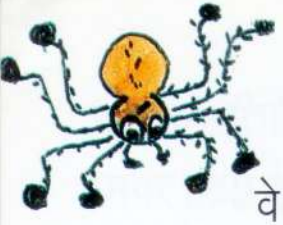




इसलिए मोती कहता है कि तुमको कोई ऐसा काम करना होगा जो कभी किसी ने न किया हो। तब सभी लोग तुम्हारा नाम जान जायेंगे। और तुम प्रसिद्ध हो जाओगे।'' लेकिन छुटकू समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या करे।

अटकू ने कहा, ''तुम क्यों चिन्ता करते हो? तुम तो काफ़ी प्रसिद्ध हो। मैं, मटकू, मोती तोता और इस झाड़ी की सारी मकड़ियाँ तुम्हारा नाम जानती हैं।'' छुटकू ने ज़ोर–ज़ोर से अपना सिर और आठों पैर हिलाकर कहा, ''ऐसा नहीं है, किसी ने भी मेरे बारे में कोई गीत नहीं लिखा है।''



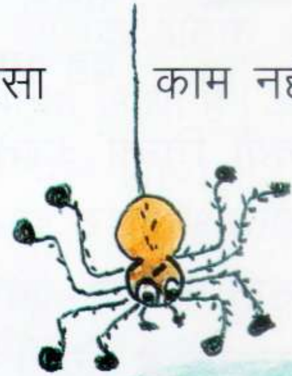


अटकू और मटकू चुपचाप उठकर वहाँ से चले गये। वे अपने दोस्त की प्रसिद्ध होने में कोई मदद नहीं कर पाये। छुटकू बैठकर सोचने लगा कि वह ऐसा कौन सा काम करे, जो किसी और मकड़े ने कभी न किया हो।

उसने सोचा—वह बहुत अच्छा जाल बनाता है। लेकिन वो तो सारे मकड़े करते हैं।

वह ऊपर—नीचे बहुत तेज़ चल सकता है। लेकिन ऐसा तो सारे मकड़े करते हैं।

वह कोई भी ऐसा काम नहीं करता, जो दूसरे मकड़े न करते हों। और इस तरह बहुत दिन बीत गये। छुटकू प्रसिद्ध नहीं हुआ।







एक दिन वह अपने जाल में बैठा हुआ था तभी उसने अटकू के चिल्लाने की आवाज़ सुनी, "छुटकू बचाओ, मटकू को चोट लग गई, बचाओ, बचाओ।"

छुटकू बहुत तेज़ भागा।

उसने देखा, एक बड़ा–सा पत्थर मटकू पर गिर गया था। मटकू उसके नीचे से किसी तरह निकल तो आया था। लेकिन उसका पैर टूट गया था। उसकी कमर में भी चोट लग गयी थी। वह उल्टा पड़ा था। अटकू और दूसरे गुबरैले उसके आसपास भागदौड़ कर रहे थे।



छुटकू ने कहा, "अटकू, जल्दी से एक छोटा–सा पत्ता ले आओ।" अटकू पत्ता ले आया।

रात होने लगी थी। मकड़े अँधेरे में ठीक से नहीं देख सकते। इसलिए अटकू ने अपने रिश्ते के भाई जुगनू को बुलाया और उस जगह पर रोशनी करवाई। छुटकू ने पत्ते की डन्डी को मटकू के टूटे पैर से सटाकर चारों तरफ़ पत्ता लपेट दिया। और धागा बुनने लगा। इस तरह पैर पर, मकड़ी के रेशमी तार की पट्टी अच्छी तरह बँध गयी।



उसके बाद छुटकू ने मटकू की कमर पर पत्ता रखकर उस पर भी जाल बुनकर पट्टी बाँध दी। इससे मटकू को बहुत आराम मिला और फिर सारे गुबरैले उसको घर के अन्दर ले गये।

छुटकू बहुत थक गया था लेकिन वह खुश था। उसने अपने दोस्त की जान बचाई थी।

जब छुटकू अपने घर की तरफ़ चला तो छोटे–बड़े बहुत सारे गुबरैले उसके साथ–साथ चल रहे थे और बहुत से जुगनू उसके रास्ते में रोशनी करते उड़ रहे थे।



वे सभी एक गीत गा रहे थे, जिसे मोती तोते ने लिखा था :



*छुटकू मकड़ा प्यारा,*
*उसका दिल है बहुत बड़ा,*
*पैरों में पट्टी कर देगा,*
*बुनकर सुंदर जाला,*
*छुटकू बड़ा निराला।*

कुछ ही दिनों में सारे जंगल में छुटकू की प्रसिद्धि फैल गई। हर शाम, जब जुगनू आकर काँटेदार झाड़ियों को झिलमिला देते हैं तब छुटकू के बारे में गीत गाया जाता है। अगर तुम कभी जंगल में जाओगे तो तुम्हें भी ये गीत सुनाई देगा।

छुटकू क्या सोचता है?

छुटकू प्रसिद्ध होकर बहुत खुश है। लेकिन वह कहता है: ''मैं तो इस बात से ज़्यादा खुश हूँ कि मेरे दोस्तों को जब भी मदद की ज़रूरत होती है, वे मेरा ही नाम पुकारते हैं।''



जंगल की कँटीली झाड़ियों में छुटकू मकड़ा रहता था। वह दुनिया भर में नाम कमाना चाहता था। छुटकू और उसके दोस्तों की रोचक कहानी है 'छुटकू मकड़ा'।

*इस श्रृंखला की अन्य पुस्तकें*

हमारी खूबसूरत दुनिया

एक बड़ी मुसीबत

रोन्दू और मुक्की

नौका की सैर

**Pratham Books**

Chutkoo Makda (Hindi)

M.R.P. Rs.20.00

ISBN 81-8263-038-X

9788182630383